The Research Dialogue

An Online Quarterly Multi-Disciplinary
Peer-Reviewed / Refereed Research Journal
ISSN: 2583-438X
Volume-1, Issue-4, January 2023
www.theresearchdialogue.com

ग्वालियर घराने के प्रसिद्ध गायक पं0 शंकरराव पंडित

डॉ० शालिनी वर्मा

असिस्टेन्ट प्रोफेसर, संगीत गायन

शहीद मंगल पाण्डे राजकीय महिला स्नातकोत्तर महाविद्यालय, मेरठ।

सारांश

*ग्वालियर घराने के पं0 शंकरराव पंडित जी का नाम बड़े आदर व सम्मान से लिया जाता है। पंडित जी का जन्म **बैसाख सुदी नवमी** सन् 1862 में हुआ। शंकरराव पंडित जी ने हद्दू खाँ, नत्थू खाँ, निसार हुसैन खाँ साहब से संगीत की शिक्षा प्राप्त की। धीरे–धीरे शंकरराव पंडित जी की प्रसिद्धि पूरे देश में फैल गई। शंकरराव जी की ख्याति ने देशभर की विभिन्न संस्थाओं को प्रेरणा दी तथा इन संस्थाओं के निमन्त्रण पर सहर्ष उन्होंने अपने शिष्यों के साथ देश के बड़े–बड़े नगरों बम्बई, पूना, कलकत्ता, लखनऊ, जालंधर, दिल्ली, बनारस आदि का दौरा किया। पं0 शंकरराव जी की पत्नी का नाम **श्रीमती पार्वती बाई** था। 26 जुलाई 1893 को शंकरराव पंडित जी के घर पुत्र रत्न ने जन्म लिया एजो कि **कृष्ण शंकर राव** के नाम से प्रसिद्ध हुये। शंकरराव पंडित जी अत्यन्त सरल ए विनम्र परन्तु स्वाभिमानी व्यक्ति थे। **सन् 1917** बैसाख पूर्णिमा को महान संत कलाकार, संगीत विद्या धुरंधर, सरस्वती के परम उपासक और अपने विद्यार्थियों के सच्चे गुरु नाद ब्रह्म में लीन हो गये।*

Keywords *"शंकरराव पंडित जी ,ग्वालियर घराना ।*

ख्याल गायन में ग्वालियर के पं0 शंकरराव पंडित जी का नाम बड़े आदर व सम्मान से लिया जाता है। शंकरराव पंडित जी संगीत जगत में अपना अद्वितीय स्थान रखते है व तत्कालीन संगीतज्ञो की श्रेणी में उन्हें सर्वोच्च स्थान प्राप्त था, तथा अपनी प्रतिभा, मधुर आवाज, अविलक्षण स्मरण शक्ति, कठोर परिश्रम एवम् अटूट गुरु भक्ति से भारतीय संगीत में अमिट बनकर अपनी कला की सम्पूर्णता का जो परिचय दिया,उसकी पुनरावृत्ति असम्भव है।

"शंकरराव पंडित जी का जन्म **बैसाख सुदी नवमी संवत 1920** (सन् 1862) में हुआ। शंकरराव पंडित जी के पिता का नाम **श्री विष्णु पंडित** था"[प] शंकरराव पंडित जी साक्षात शंकर के समान भोले स्वाभाव के व्यक्ति थे। "6 फिट ऊँचा छरहरा बदन, सिर पर ग्वालियर की पगड़ी, वित्रीर्ण ललाट पर लगा हुआ आड़ा त्रयांगुल चंदन, नीले आरक्त एवम् नाद ब्रहम में विलीन नेत्र, रौबीली मूंछे, कुर्ता कोट तथा महाराष्ट्रीयन धोती हाथ में छड़ी, लुभावनी मुद्रा स्मित मुख, ऐसी देदीव्यमान मुद्रा'"[पप] वाले शंकरराव पंडित जी थे। शंकरराव पंडित जी के दादाजी **"पं0 रामचन्द्र चिंचवडकर"** महाराष्ट्र में पूना के पास चिंचवड़ नामक स्थान के निवासी थे तथा पूना के विश्राम बाग के पास आपका बाड़ा था। वे वेदशास्त्र के सुविज्ञ संस्कृत के पंडित तथा कीर्तनकार थे। वे महाराष्ट्र के परंपरावादी रीति से कीर्तन करने में सिद्धहस्त थे और संगीत में प्रचलित सब विद्याओं से भली भाँति परिचित थे। उनके सुपुत्र पंडित विष्णु शास्त्री संस्कृत के प्रकाण्ड विद्वान और कीर्तनकार थे।"[पपप]" विष्णु पंडित जी महाराष्ट्र के चिचवड़कर गाँव के होने के कारण अपने नाम के आगे 'चिंचवड़कर' की उपाधि लगाते थे।

"वेदशास्त्र और संगीत के अन्यतम विद्वान विष्णु चिंचवड़कर को ग्वालियर के तत्कालीन महाराज जियाजिराव सिंधिया ने ग्वालियर–दरबार में आमंत्रित किया और उनकी विद्वता से प्रभावित होकर उन्हें **पंडित** की उपाधि प्रदान की। यही उपाधि बाद में उनके परिवार के साथ जुड़ गई।"[पअ] इस प्रकार महाराष्ट्र में शंकरराव पंडित के पिता 'विष्णु शास्त्री चिचवड़कर के नाम से प्रसिद्ध थे "पंडित की उपाधि उन संगीत विशेषज्ञों को दी जाती थी जो कि संगीत सिद्धान्तों से पूर्ण परिचित होते थे। यह डिग्री संगीत के 'डाक्टर' के समतुल्य होती थी। 'पंडित की डिग्री से उपाधिस्त संगीतकार से संगीत सिद्धान्तों को पढ़ा सकने और संगीत के सामान्य पहलुओं की जानकारी की अपेक्षा की जाती थी।"[अ]"महाराष्ट्र से ग्वालियर आने पर उन्होंने

कम्पूपुल के पास 450 रूपये में एक घर लिया, उसी घर में अब उनके प्रपोत्र रह रहे है।''[अप] विष्णु पंडित जी की संगीत में विद्वता और अत्याधिक रूचि होने के कारण वो संगीत के विख्यात एवम् गुणी कलाकारों को सुनते एवम् उनके सम्पर्क में रहते थे। "वे बड़े विद्वान शास्त्री एवम् अप्रतिम कलाकार थे।"[अपप] **"विष्णु पंडित जी शिवभक्त थे।"**[अपपप] उनका संगीत से अत्यन्त प्रेम था अतः पिता के सांगीतिक संस्कार संतान में आना स्वाभाविक ही था। "पं0 विष्णु पंडित जी तत्कालीन प्रसिद्ध गायक उस्ताद हस्सू खाँ व हद्दू खाँ साहब से परिचित होने के कारण प्रायः उनके पास संगीत श्रवणार्थ जाया करते थे।"[पग] तथा शंकरराव पंडित जी को भी अपने साथ ले जाते थे। शंकरराव पंडित जी की संगीत के प्रति अत्यन्त रूचि थी।अतः शंकरराव पंडित जी हद्दू खा, नत्थू खाँ, निसार हुसैन खाँ साहब से संगीत की शिक्षा प्राप्त करके एक अच्छे गायक बन गये। धीरे–धीरे शंकरराव पंडित जी की प्रसिद्धि पूरे देश में फैल गई।*शंकरराव पंडित जी ग्वालियर गायकी तथा टकसाली बंदिशो के लिये विख्यात हो गये।* "शंकरराव पंडित जी की प्रसिद्धि में उस्ताद निसार हुसैन खाँ साहब का बहुत बड़ा योगदान रहा है। निसार हुसैन खाँ साहब को घूमने का बड़ा शौक था वे भारत में जहाँ भी जाते अपने इस प्रिय एवम् अत्यन्त प्रतिभाशाली शिष्य के प्रति प्रायः कहा करते थे यदि **"मेरी जवानी का गाना सुनना है तो शंकर को सुनो। यदि पर्दा डालकर सुना जाए तो कोई मुझ में व शंकर में फर्क नहीं बता सकेगा।"**[ग] शंकरराव जी की ख्याति ने देशभर की विभिन्न संस्थाओं को प्रेरणा दी तथा इन संस्थाओं के निमन्त्रण पर सहर्ष उन्होंने अपने शिष्यों के साथ देश के बड़े–बड़े नगरों बम्बई, पूना, कलकत्ता, लखनऊ, जालंधर, दिल्ली, बनारस आदि का दौरा किया। शंकरराव पंडित जी कभी नाम व ख्याति के पीछे नहीं भागे वरन् निमन्त्रण पर वें जहाँ–जहाँ गये संगीत रसिकों ने खुले ह्रदय से उनका स्वागत किया और प्रशंसा पत्र भेंट किये। देश के तत्कालीन उस्तादों एवम् संगीतज्ञो ने उनकी कला निपुणता व टकसाली नायकी की बहुत प्रशंसा की।"[गप]

लगभग तीस वर्ष की अवस्था में शंकरराव जी ने विवाह किया।"[गपप] पं0 शंकरराव जी की पत्नी का नाम **श्रीमती पार्वती बाई** था। 26 जुलाई 1893 को शंकरराव पंडित जी के घर पुत्र रत्न ने जन्म लिया एजो कि **कृष्ण शंकर राव** के नाम से प्रसिद्ध हुये। शंकरराव पंडित जी अत्यन्त सरल ए विनम्र परन्तु स्वाभिमानी व्यक्ति थे। "शंकरराव पंडित जी का रहन–सहन बिल्कुल सादा था। खूँटी पर जो कपड़े टंगे हो चाहे वह

पहने हुये ही क्यों न हो पंडित जी उन्हें ही पहन कर बाहर चले जाते थे। संगीत का धन हेतु उन्होंने कभी उपयोग नहीं किया अन्यथा इतने बड़े संगीतज्ञ होने पर किसी दरबार में या ग्वालियर शहर से बाहर जाकर वे सहज ही विपुल धर्नोपार्जन कर सकते थे। परन्तु अपने जन्म स्थान, परिवार व शिष्य वर्ग से प्रेम होने के कारण उन्होंने सारे प्रलोभन एवम् आर्कषणों को अस्वीकार कर दिया।"[गपपप]

कला में रमे हुए साधना में रत शंकरराव पंडित जी का "दैनिक जीवन अत्यन्त नियमित, सादा व सरल था। सुबह आँख खुलते ही सिरहाने पर रखा हुआ तानपुरा लेकर वे खरज की साधना करते थे। ग्वालियर घराने में कठोर स्वर साधना तालीम का एक आवश्यक अंग है।"[गपअ]रियाज़ करने के बाद पंडित जी घर में कुएँ पर जाकर (यह कुआँ अभी भी घर में है श्रीमती राधाबाई पंडित ने शोधकर्त्ती को दिखाया) नहा धोकर भगवान शंकर की पार्थिव पूजा करते। श्रीमती राधाबाई पंडित ने बताया कि शंकरराव पंडित जी "पार्थिव पूजा में गंगा किनारे की मिट्टी को लेकर हाथ पर ही उसकी पिंडी बनाते व हाथ पर ही रखे हुये सारी पूजा, ध्यान, भोग इत्यादि लगाते, परन्तु बीच में पिंडी हाथ से नीचे नहीं रखते थे, पूजन के बाद उसका विसर्जन कर देते थे। इस पूजन से पूर्व अन्न–जल नहीं ग्रहण करते।"[गअ] इसके बाद परिवार के सदस्यों और शिष्यों को सांगीतिक शिक्षा देकर वे रोज विट्ठल मन्दिर में जाते थे तथा प्रतिदिन हजारों गायत्री जाप करते थे। शंकरराव पंडित जी ने संगीत ही को ईश्वरीय भक्ति का साधन समझा। वहाँ पर उनका गाना सुनने ग्वालियर व बाहर के लोग प्रायः आते रहते। राधाबाई पंडित जी ने बताया – **"भगवान विट्ठल के समक्ष पंडित जी रोज 2–3 घंटे गाकर घर आते व अपने घर के आंगन में खड़े अखंड बेल (अखंड बेल के वृक्ष में चार पत्ते होते है। यह बहुत ही दुलर्भ होता है। अखंड बेल और कनेर का वृक्ष आज भी ग्वालियर में उनके घर में लगा है) के वृक्ष के नीचे माला लेकर जप करते थे। दोपहर भोजन तैयार होने पर उन्हें बुला लिया जाता था। वें महाराष्ट्रीयन पद्धति का बना सादा भोजन ही पसन्द करते थे। भोजन के पश्चात् थोड़ी देर वामकुक्षी (थोड़ी देर झपकी लेना) करते थे।"**[गअप] संध्या समय पंडित जी दोबारा भगवान विट्ठल के मन्दिर में जाते। प्रातःकाल की अपेक्षा संध्या समय मन्दिर में संगीत के श्रोताओं की संख्या अधिक होती थी। शंकरराव पंडित जी के साथ **'अप्पा'** नामक तबला वादक संगति करते थे। कभी–कभी सारंगी पर भी संगत करने के लिये कोई वादक बैठ जाते थे। संध्या समय कभी–कभी शंकरराव पंडित जी अपने उस्ताद निसार हुसैन खाँ साहब

और अनन्य भक्त पेंटर साहब, लक्ष्मण राव सहस्रबुद्धे के साथ घूमने निकल जाते थे। पेंटर साहब एक योगी, पहलवान तथा मलखम्भ आदि विद्या में सिद्धहस्त थे। उन्होंने पंडित जी के पुत्र कृष्णराव जी को "योगसाधना, प्राणायाम, तैराकी, मलखम्भ तथा पहलवानी को तालीम दी।"[गअपप]

इससे स्पष्ट होता है कि कला के लिये कला है परन्तु धन के हेतु कला नहीं होती, इसका प्रत्यक्ष उदाहरण शंकरराव पंडित जी थे। अपने सुन्दर ध्येय के लिये उन्होंने महान त्याग किया। शंकरराव पंडित जी ने आजीवन साधारण जीवन व्यतीत किया कभी भी धन की चिन्ता नहीं की। वास्तव में उन्होंने अपने जीवन का प्रत्येक क्षण कला की साधना में लगा दिया था, उनके विचार उदार एवम् प्रशस्त थे। स्वभाव से वे विनम्र, सरल, शान्त, कर्मठ, स्वाभिमानी एवम् गम्भीर स्वभाव के थे। शंकरराव पंडित जी केवल नाम से ही शंकर नहीं अपितु उनमें ईश्वर का अंश भी विद्यमान था। शंकरराव पंडित जी के ग्वालियर स्थित घर में एक मन्दिर है जिसमें आज भी बहुत से शिवलिंग है। श्रीमती राधा बाई पंडित ने बताया ***"हमारे घर में शिवरात्रि का बहुत बड़ा उत्सव होता है एक बार विष्णु पंडित जी को महादेव जी ने दर्शन दिये थे, तभी से हमारे घर शिवरात्रि पर भण्डारा होता है। रात भर संगीत सभा होती जिसमें परिवार के सभी सदस्य व शिष्य गण और कभी–कभी बाहर से आए हुये अतिथि कलाकार भी गाते। यह उत्सव अभी तक प्रत्येक शिवरात्रि पर होता है।"***[गअपपप]

परन्तु जब ''23 नवम्बर 1916 को खाँ साहब निसार हुसैन खाँ ने इस संसार को सदा के लिए त्याग दिया। पंडित शंकरराव जी ने पूरे सम्मान तथा धार्मिक विधियों से खाँ साहब की खानदानी कब्रगाह में उनके पार्थिक शरीर को दफनाया। उन दिनों का वर्णन करते हुए पंडित कृष्णराव जी ने अपने संस्मरण में लिखा है – "उस समय पूज्य पिताजी को जबरदस्त धक्का लगा था। एक तो उनका स्वास्थ्य वैसे ही खराब था, उसमें खाँ साहब के दु:खद निधन से उन्होंने अन्न त्याग दिया। बड़ी कठिनाइयों से, आग्रह से हमने उनको मनाया कि वो अन्न जल तो ग्रहण करें। पैगम्बरवासी खाँ साहब के 40 वें दिन फकीरों और गरीबों को दान दिया गया। खाँ साहब का कोई परिवार नहीं था। पंडित शंकर राव जी ने सारी धार्मिक रस्में अदा की। रात को मैंने खाँ साहब की पुण्य स्मृति में एक विशाल जलसे का आयोजन किया था। उसमें मेरे अतिरिक्त गोरीमंगो, भाऊ साहेब गुरुजी, पर्वत सिंह, मेहंदी हुसैन वगैरह कलाकार आए थे। अन्त में पूज्य पिताजी का

गाना था। गिरा हुआ स्वास्थ्य, खाँ साहब के पैगम्बरवास का गहरा सदमा, इस कारण वे अत्यंत कमजोर हो गये थे। फिर भी खाँ साहब की याद में वे गाने बैठे। गाना ऐसा हुआ मानो स्वयं खाँ साहब ही गा रहे हो। गुरु शिष्य का क्या आत्मिक प्रेम था कि पंडित शंकरराव जी के इस अंतिम सार्वजनिक कार्यक्रम में उनकी रूह का अहसास उपस्थित लोगों को हुआ था।

पंडित शंकरराव जी का स्वास्थ्य लगातार गिरता ही गया। उन्हें मधुमेह व पिनस बीमारी ने घेर लिया था। आपके हितेच्छु लोगों व इलाज करने वालों ने सलाह दी थी कि आप गाना बंद कर दे। परन्तु यह आपके लिए संभव नहीं हुआ जिससे बीमारी और अधिक बढ़ गई। संगीत के लिए उन्होंने स्वास्थ्य की परवाह किये बिना जो अपार कष्ट एवं परिश्रम किया उससे शरीर एकदम क्षीण हो गया था। उस पर से गुरू के पैगम्बरवास के सदमों को वे और ज्यादा वहन नहीं कर सके। पं0 कृष्णशंकर राव जी के शब्दों में, "गुरु शिष्य का ऐसा आपार प्रेम था कि वें आपस में बिछुड़कर रहना नहीं चाहते थे। **संवत् 1974** अर्थात **सन् 1917** बैसाख पूर्णिमा को महान संत कलाकार, संगीत विद्या धुरंधर, सरस्वती के परम उपासक और अपने विद्यार्थियों के सच्चे गुरु हम सब को छोड़कर नाद ब्रह्म में लीन हो गये।"[गपग] इस प्रकार प्रभावशाली व्यक्तित्व से सम्पन्न पं0 शंकरराव जी का जीवन सतत् साधना, प्रदीर्घ श्रम, कठिन अध्यवसाय एवम् विशुद्ध गुरु भक्ति का जीवन था।

संदर्भ सूची :

1. गायन महर्षि कै0 शंकरराव पंडित, संगीत कला बिहार फ.1965,पृ0 42
2. पंडित कृष्णराव शंकर पंडित प्रसंग, अनहद भारत भवन, 16,17,18 नवम्बर, 1985
3. 'भारतीय संगीत के अमर साधक, कृष्णराव शंकर पंडित, प्रो0 लक्ष्मण कृष्णराव पंडित, पृ0 9
4. हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत की घराना परंपरा, शम्भु नाथ मिश्र, पृ० 34
5. भारतीय संगीत ,राम अवतार वीर, पृ0 157
6. भारतीय संगीत के महान संगीतकार : पं० शंकर पंडित , तुषार पंडित, पृ० 12
7. संगीत कला बिहार, फरवरी 1965
8. साक्षात्कार, श्रीमती राधाबाई पंडित पत्नी स्व0 श्री कृष्ण शंकर राव पंडित, ग्वालियर 05.03.06
9. 'संगीत', जून ,1996, पृ0 36

10.भारतीय संगीत के महान संगीतकार : पं० शंकर पंडित, तुषार पंडित, पृ० 19

11.समारोह पत्रिका, 1964,पृ0 48

12.समारोह पत्रिका, 1964, पृ0 48

13. साक्षात्कार, श्री विष्णु पुरूषोत्तम मानवलकर जी, ग्वालियर 06.03.2006

14.भारतीय संगीत के अमर साधक, प्रो0 लक्ष्मण कृष्णराव पंडित, पृ0 15

15.साक्षात्कार – श्रीमती राधाबाई पंडित 05.03.2006

16. भारतीय संगीत के अमर साधक, प्रो0 लक्ष्मण कृष्ण राव पंडित, पृ0 16

17. साक्षात्कार – श्रीमती राधाबाई पंडित, 05.03.2006

18. भारतीय संगीत के अमर साधक, प्रो0 लक्ष्मण कृष्णराव पंडित, पृ0 19

THE RESEARCH DIALOGUE
Manifestation Of Perfection

THE RESEARCH DIALOGUE

An Online Quarterly Multi-Disciplinary
Peer-Reviewed / Refereed Research Journal
ISSN: 2583-438X
Volume-1, Issue-4, January 2023
www.theresearchdialogue.com
Certificate Number-January-2023/22

Certificate Of Publication

This Certificate is proudly presented to

डॉ० शालिनी वर्मा

For publication of research paper title

ग्वालियर घराने के प्रसिद्ध गायक पं0 शंकरराव पंडित

Published in 'The Research Dialogue' Peer-Reviewed / Refereed Research Journal and E-ISSN: 2583-438X, Volume-01, Issue-04, Month January, Year-2023.

Dr.Neeraj Yadav
Executive Chief Editor

Dr.Lohans Kumar Kalyani
Editor-in-chief

Note: This E-Certificate is valid with published paper and the paper must be available online at www.theresearchdialogue.com